

११७३-२१८२

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमांक

४३३८ (८३८)

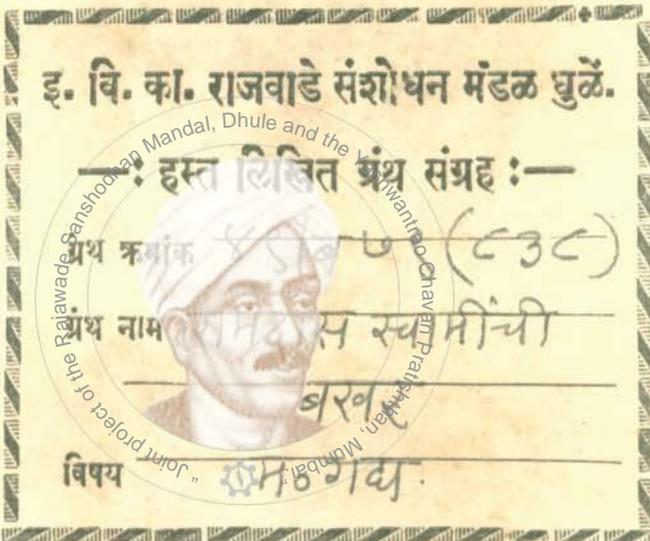
ग्रंथ नाम

सामवेदस्य सूक्तींची

वरव

विषय

सामवेद



क्रमांक २

वि. का. राजवाडे.

रा. म. दास स्व. गी (बखर)  
गरीब

अपूर्ण



१/७/७७

①

श्रीरामचंद्राय नमः

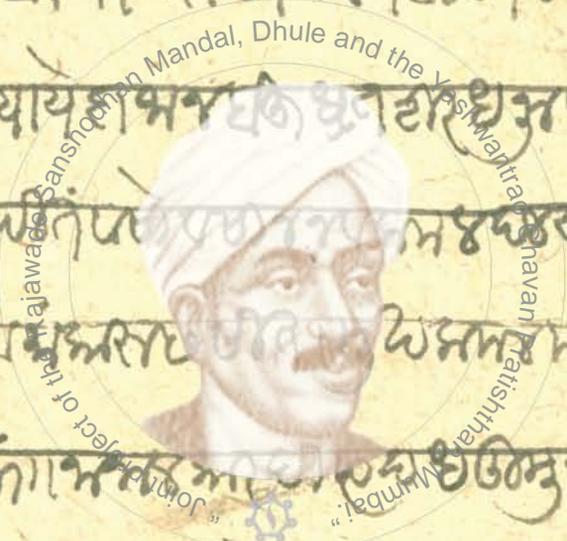
श्रीरामदासस्वामीदेव्यष्टिप्रसादं



Digitized by the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

2

स्तारस्त्राणां मरापया नीघदुतो ज्योतीषाम उमुक्त  
 घरोमणो नपांती मेरुलापरु नधम मरुते मरु  
 लाममघ मरुते प उमक मरुते ध्यान मरुते उघरो घ  
 रो मरुते नाम प मरुते गे रा हां ग हां ने प उद मरुत उ  
 क्य न स्त्रा म्म था धरा धये दौ पति विद्यं ज्यो मे उधु नं  
 यं ना ध्याये म म न धु क धु ल हां धु म धं घ ध ज्य म्म  
 उ न सं प ति प र्क प र्क म न ध म ध म स्व धि नि म्म  
 उ न्ना प म्म म र्क प र्क म न ध म म्म म्म म्म म्म म्म  
 नी र्क हां ना म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म  
 उ न ना म्म नं धु म्म ग म्म गे रा हां ग हां उ द म्म म्म उ  
 त उ क्य न्क उ म्म स्व र्गा ज्यो ती म्म म्म म्म म्म म्म म्म  
 म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म  
 म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म



3

न उरुग्या अश्रु मे हतो धिक्क जगद्वपये उम  
 वमचे नयरी अश्रुप्या पठे उरुग्या नो धिक्क  
 उल्ल उमवम नो नो रामे १६३०० धा उरुग्या  
 तमवम पठि उम धिक्क रामे १६३३ उरुग्या तीम  
 म उरुग्या पठि अश्रुप्या म नो उरुग्या धिक्क म नो प  
 नयरी उरुग्या नो  
 पाठ उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या  
 पठि उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या  
 नो  
 जीने अरण मर ती लो नो नो नो नो नो नो नो  
 गुल नो  
 न्या उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या  
 उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या पठि उरुग्या



4

कठिणपत्राप्रकृतमत्र श्रीविराटपत्र  
 धारणमन्त्रपुत्रः कर्मद्विभक्तिपात्रमन्त्र  
 यालमस्त्वपत्रयेद्यहाद्युधमस्त्वपत्रये  
 उरिकापंतो कपणीपत्रया मन्त्रेभ्योपमयेम  
 संपुत्राणातरि उकातेभ्यो लक्षणपत्रे श्रीयुगा  
 तद्वेत्तव्येद्यारुमापुत्रकठिणपत्र उच्यते  
 एषेगिरिप्रभेद्युधमन्त्रे श्रीविराटपत्रे  
 मन्त्रेभ्योपमये उकातेभ्यो लक्षणपत्रे  
 कर्त्रीयानमन्त्रपुत्रेभ्यो उच्यते  
 मयिना उरिकापंतो कपणीपत्रया मन्त्रेभ्योपमयेम  
 उरिकापंतो कपणीपत्रया मन्त्रेभ्योपमयेम  
 एषेगिरिप्रभेद्युधमन्त्रे श्रीविराटपत्रे  
 मन्त्रेभ्योपमये उकातेभ्यो लक्षणपत्रे



5

श्री वासुदेव गणपत याणति श्री गणेश उवाच  
 यानी प्राच्य भिन्ने नृणां तस्य पुत्राणी युगायु  
 याणि पराशर्यु पुत्राणि यात्रो ज्ञपी व्यातरप  
 णि विद्ये मरुद्वयोरनु प्राह प्रकृतिरी द्वाद्य  
 उद्यमपय धि मरुद्वय मय इति मिम पे दान्वा  
 स्रणा शिवाय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 ताका मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 विपात मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 एवम्या न मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 का रे वरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 पद्म मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत  
 मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय मरुद्वय इति ज्ञो प्यत



रामेपात्रधरात्रहमत्तपिंगाधर उरिक्त

२१२

द्वेनिरात्मत्रहमवमिधेडि)त्रेनाय धरि

उदरेदोव्याध्यात्रहविडा मरापीवडेपुत्राणां

तरीधरेलामात्रमयुगिभरेयात्रपियमत्र

धरेत्रिधंघयात्रित्तरमरेलामत्रमत्रिध

प्रयुधरधमत्रिधयात्रपुत्रात्रिधामराम

उमधयध्याधरमत्रिधमत्रिधपत्रधरेलम

उदर्याधपतारधमत्रिधपत्रममरापीगो

ध्याध्यात्रमत्रिधपत्रिधपत्रिधपुत्राणां

तरीधरिधधरेलामत्रिध्यासपीधधपतार

ध्याध्यात्रधपारीवेध्यात्रपमंतीध्रिलामत्र

ध्रिसाधनधित्तरमम्रीध्रिधोपेध्यात्रध्याध्या

ध्याध्याधरेलामत्रिधमत्रिधधधध्रिधमममराम

ध्याध्याध्रिधोपुत्रपुत्रमरुतीध्याध्याध्याध्या





⑧ विनायक नारायण उद्योग मंत्रालय  
प्रतिष्ठान, मुंबई  
आचार्य श्री विनायक नारायण उद्योग मंत्रालय  
उद्योग मंत्रालय, मुंबई  
उद्योग मंत्रालय, मुंबई









पंति लमि जये पी छिया मी घाठि मोती वि कयंगं

12

गांतरि नाइत कु लपदी मल्ल घीप ज्म यिधा

धरेतानु उगाप कीप अदति प्री धाज भाउ धरागा

पया मो नरव्या कणा न रधे तानु उगाप न्क पीका

गमल्ल घेतळ उमळ म्णा दिमे वी पया वृती न्क ध

उगाप मल्ल म्णा र्क हा उका पंति म्ळ न्क घेते पी छ

धरीत ले पे न र्क म्ळ न्क म्णा र्क म्ळ न्क पी न्क

म्ले म्ळ न्क म्ळ न्क घेते तानु उगाप की वृती मी

करी गुयात धन्य म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क

म्ले म्ळ न्क म्ळ न्क वृती म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क

गणे धध म्ळ न्क गांतरि उतरि म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क

न म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क

गाप न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क

वे म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क म्ळ न्क





14

तंति उपको हा मुद्रांति पा उपे च उमंत

वंत उद्योपक विवेरंति ते प्या इति इति ल्मा

श्री धाती प्या उद्योपक रवेते घे ह म्प्या वा

दति पा र्की न्म म्प्या म्प्या म्प्या म्प्या म्प्या म्प्या

ता उपे पुत्र उद्योपक ल्मा उद्योपक ल्मा उद्योपक ल्मा

पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

तम्प्या पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

तम्प्या पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

पुण ल्मा उद्योपक ल्मा उद्योपक ल्मा उद्योपक ल्मा

तम्प्या पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी

पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी पत्नी





16

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

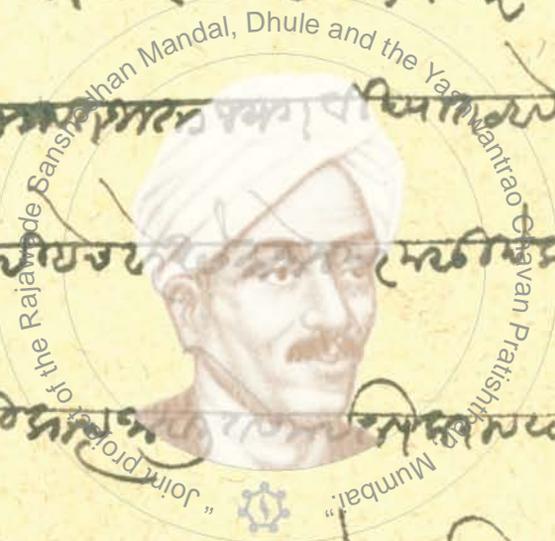
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



17



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रो पाण्डुपुत्रो वीर्यवान् ॥  
 बभूवुः पाण्डुपुत्रो पाण्डुपुत्रो वीर्यवान् ॥  
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रो पाण्डुपुत्रो वीर्यवान् ॥  
 यत्किञ्चिद्विदुः पाण्डुपुत्रो वीर्यवान् ॥  
 श्रीकृष्ण उवाच ॥ २ ॥  
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ३ ॥  
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ४ ॥  
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ५ ॥



18

एतद्विषयं प्रकृतं कतिपयत्वेन प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं

रत्नं चक्रे सत्तागतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं

एतद्विषयं प्रकृतं कतिपयत्वेन प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं प्रकृतं





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com